Chapter. 5

अध्याय–5

राजस्थान के ब्रजभाषा काव्य की परम्परा और प्रयोग

पंचम अध्याय

राजस्थान के ब्रजभाषा काव्य की परम्परा और प्रयोग

संवत 1900 से आधुनिक काल का प्रारंभ माना जाता हैं इस समय तक ब्रजभाषा साहित्य क्षेत्र में अक्षुण्य प्रभाव पूर्ण रूप से निखर कर हर क्षेत्र में अपना सौन्दर्य बिखेर चुकी थी। इस ने अपने परम्परागत रूप को कायम रखा किन्तु प्रथम विश्वयुद्ध के बाद ब्रजभाषा और खड़ीबोली में द्वन्द उत्पन्न होने लगा खड़ीबोली की रचना प्रकृति ब्रजभाषा के अनुकूल नहीं थी किन्तु फिर भी ब्रजभाषा की मधुरता के कारण आज भी यह अपने साहित्य कोश में दिन प्रतिदिन वृद्धि करती जा रही थी। उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, गुजरात, राजस्थान आदि राज्यों में आज भी उच्चकोटि के ब्रजभाषा कवि है। और समय के साथ-साथ इन्होंने अपने विषयों और शैलियों में भी परिवर्तन किया हैं।

राजस्थान ने ब्रजभाषा के प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यहाँ अनगिनत ब्रजभाषा साहित्यकार हैं। जिन्होंने ब्रजभाषा में साहित्य की रचना की हैं जिसमें से कुछ इस प्रकार है। श्री रामकृष्ण शर्मा, श्री भँवर स्वरूप, श्री यशकिरण खिड़िया, श्री सियाराम सक्सेना, श्री शिवचरण शास्त्री और गजेन्द्र सिंह सोलंकी आदि।

राजस्थान के अज्ञात कवियों ने ब्रजभाषा काव्य की परम्परा का पूर्ण रूप से ध्यान रखा हैं। भक्ति-भावना, शृंगार प्रियता के साथ सम-सामायिक राजनीतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक आन्दोलनों और तत्कालीन परिस्थितियों व वर्तमान रूपरेखा

को निर्मित करने में सहायता दी हैं। इन्ही पारम्परिक और आधुनिक परम्परा को किस प्रकार राजस्थान के ब्रजभाषा कवियों ने व्यक्त किया उस पर विचार करना अपेक्षित हैं।

✻ भक्ति :-

काव्य के क्षेत्र में भक्ति भाव का महत्वपूर्ण स्थान हैं। प्राचीन काल से विभिन्न रूपों द्वारा, विभिन्न भाषाओं द्वारा, विभिन्न माध्यमों से कवियों ने अपने भक्ति भावों को प्रकट किया हैं। आधुनिक ब्रजभाषा कवियों ने भी अपनी भक्ति भावना को विभिन्न छन्दों, कवित्त, सवैया, पद, दोहों के माध्यम से प्रकट किया हैं। राम और कृष्ण दोनों ही भारतीय जन-मन के आराध्य रहे हैं। किन्तु ब्रजकविता की प्रमुख प्रेरकशक्ति कृष्णभक्ति ही हैं। इस के अलावा शिव-उपासना, गणेश वंदना, सरस्वती, शारदा आदि की स्तुति कर विभिन्न रूपों द्वारा प्रस्तुत किया हैं।

गणेश जी का नाम हर शुभ कार्य के शुभारंभ में लिया जाता हैं काव्य के क्षेत्र में भी कवियों ने अपने काव्य कि शुरुआत में गणेश जी की वन्दना की है। जिसमें उन के विभिन्न नामों, गुणों का उल्लेख किया है। इस के लिए छन्द, सवैया, कवित्त और पदों की रचना की गई हैं जिस के कुछ उदाहरणों को देखेगें।

इस सवैया में **डॉ. रामनन्द तिवारी** ने गणेश जी की वंदना की हैं जिस में गणेश जी को सुखदायक बताया है जो हर कार्य को सुधारने वाले हैं।

बालक में कवि नंहि कछू कविताकार भेदहू जानि न पायौं।
प्रेम हिये कविता सम है कछु जो कवि मैलन मे दिखलायौं।
सज्ञन वृन्द क्षमा किरयौं त्रुटियां यह योग सुयोग बनायौं।
मैं कविताहि करौ हिय सौं कछु काहू न मो कहै भाव बतायौ।।
सिद्धिपति सब काज सुधारक कीर्तिमहा जग में यश छायौं।
गावत वेद पुरान सबै गुणगान सदा पुनि पार न पायौं।।
पूजत गाय सदापहिले तब सिद्धि सुदायक नाम कहायौं।
जै सुखदायक जै गणनायक पाप निवारक वेद बतायौ।।[1]

विघ्नों को दूर कर, सुखों की खान लम्बोदरय गणेश जी मुझ पर भी दया करों। मैं तुम्हारा दास हूँ मैं एक गरीब हूँ मुझ को अपनी कृपा का दान दो इस प्रकार

भक्ति करते हुए **श्री प्रभु दयाल 'दयालु'** जी ने अपनी दास्य भक्ति का परिचय दिया है। उदहारण -

विघन हरन मंगल करन, लम्बोदर सुख खान।
दया करिये मो दास पैं, दीन हीन मोहि जान॥ [2]

श्री राधाकृष्ण जी ने अमृत ध्वनि में गणेश जी की वंदना करते हुए उनकी छवि, उनके रूप का वर्णन कर रहे हैं सुंदर नयन, सिर पर चन्द्र धारण कर शंकर पुत्र एक दन्त, रिद्धी-सिद्धि मोदक का सेवन करने वाले की जय हो। उदाहरण द्रष्टाव्य है।

'जय जय जय मंगल करन छज्ज्ञत् छवि छंद
सुकवि कृष्ण रज्ञत नयन सज्ञत सिर चंद
सज्ञज्ञत सिर चंदद्धर वर-चंददधर सुत
द्ददंधर इक सुंडक्कखिर रिद्ध स्सिधि युत
गंधध्धर गर फंदद्धर कर मोदक मद मय
बंदज्ञन अमंद अनंददायक जय जय' [3]

श्री रामबाबू रघुराय ने छन्द में शंकर के पुत्र गणेश के सौंदर्य का वर्णन किया हैं। मोदक का प्रसाद ग्रहण करने वाले, विध्नों को दूर करनेवाले, माथे पर त्रिभुज धारण किए सब का मंगल करने वाले पार्वती पुत्र गणेश विशाल नयन, चन्द्रभालहि, दुःखों को दूर कर जन मानस की सहायता करनेवाले गणेश सभी मुनिवर ध्यान करते हैं। इस भाव के अमृत ध्वनि में रच कर प्रस्तुत किया हैं । वानगी द्रष्टाव्य है -

(गणपति वंदना छंद अमृत ध्वनि)

कर अंकुस, मोदक परसु, गहि तिरसूल कराल।
विध्न हरइ, मंगल करइ, श्री गिरिजा कौ लाल।
लालज्ञवालहिं, नयन विसालहि, दुक्खन टालहि।
चन्द्रब्भालहि, करत निहालहिं, जन प्रतिपालहिं।
कवि रघुराय ज्जीवन दायक, ध्यावैं मुनिवर।
दे उत्तम बर तुन्ड रज्ञति पंचक्कर। [4]

श्री रामबाबू रघुराय ने विमल ध्वनि में गणेश वंदना की है जिसमें गज मोंतियों की माला धारण किए माथे पर त्रिपुण्ड, मोदक का प्रसाद धारण करें, दूर्जन जिससे

भागते हैं भक्तों के सहायक रिद्धी-सिद्धी देनेवाले बुद्धि के नायक गणेश जी की वंदना की हैं।

विमल ध्वनि (गणेश वंदना)

'गज मुतियन माला गरे, सोभित भाल त्रिपुण्ड।
कर अंकुस मोदक परसु, अभय सुनी की सुन्ड।
सुन्डदधरं मद बुंदहि वस्सत हैस्सत सेवक पग्गन पस्सत।
दुरगुन भञ्जत ससि सुचि रञ्जत दुंदुभि बञ्जत सिंदुर सञ्जत।
रघुराय स्सब सुक्खन दायक भक्त सहायक ध्यावौं सब तज।
रिधि सिधि दायक बुद्धि विधायक देवन नायक बंदो मुख गज।'[5]

श्री नत्थूलाल चतुर्वेदी जी ने गणेश जी की वंदना करते हुए लिखा है कि संकट को हर लेने वाले एक दन्त जिनके दर्शन से जीवन सफल हो जाता है। बुद्धिमान, रत्न जड़ित मुकुट को धारण करने वाले मूषक की सवारी करने वाले को नमन करता हूँ।

नमामि यस्य आनन करी पाण्डव करी,
सुघर सलौने सुत सुता सैल के जो।
संकट विमोचन दुख भंजन गनेश,
आराध्य देव देवन एक दंत जो।
मंगलमय जिन दर्स, सुफल देनहार,
बुद्धि के अधीश्वर, कर मोदक सम्हारे जो।
रजत मणि मंडित मुकुट एक सीस मांहि,
अति कृपालु अति ललाम, मूषक बिराजे जो। [6]

श्री भँवर स्वरूप 'भँवर' जी ने चार पंक्तियों में ही पूर्णरूप से गणपति के गुणों को बताते हुए आराधना की हैं जैसे बृहस्पति के गुरू, विचारों वाणी को मधुरता देनेवाले, रिद्धि - सिद्धि - बुद्धि देनेवाले, अनंत कालों तक अज्ञानता हरने वाले सुख प्रदान करते हैं आनंद, खुशी देनेवाले ऐसे नायक को प्रणाम।

आराध्य गणपति, गुरू ब्रहस्पति, विचार वाणी विनाय कम।
ऋद्धि-सिद्धि दाता, बुद्धि प्रदाता, बेदादि ज्ञाता विधायकम्।

अन आदि अन्ता, अज्ञान हन्ता, विसानवन्ता, सुखदायकम्।
आनन्दकर्ता, मन मोद भर्ता, भवभार हर्ता, जग नायकम्॥ [7]

'**श्री फतहलाल गुर्जर 'अनोखा''** जी ने विनय भाव द्वारा गणेश जी के सौंदर्य का वर्णन करते हुए लिखा है जनेऊ माला धारण किये, माथे पर तिलक, शीश पर चन्द्र और सिन्दूर का टीका शोभनीय हैं, मूषक की सवारी कर दुःखों को हरने वाले स्वामी मेरे दुःखों का भी हरन कीजिए।

माला जेनेऊ पीताम्बर कुण्डल भाल किरीट लगै अति नीकौ।
सीस पै चन्द्र माँ गौरी के नन्द ललाट पै सोहे सिन्दूर कौ टीका॥
मूषा वाहर ईश गजानन भावन स्वामी तू रिद्धि-सिद्धि कौ।
मोदक प्रिय मुद मंगलकारी हो कारज सारौ 'अनोखा' कवी कौ॥[8]

इस प्रकार गणेश जी के सौन्दर्य वर्णन के साथ-साथ विनय, स्तुति, वंदना द्वारा उनकी सर्वश्रेष्ठता का वर्णन करते हुए छन्द, कवित्त, दोहों और पदों को रचा है। अधिकतर कवियों ने काव्य के शुरुआत ही गणेश वंदना द्वारा की है।

इसी प्रकार शिव की भक्ति करते हुए अनेक दोहों, पद, छंद, कवित्त आदि ब्रजभाषा में लिखे गए हैं। जिसमें शिव की अराधना करते हुए उनके सौंदर्य शक्ति का सुन्दर रूप से वर्णन किया गया है।

श्री हीरालाल शर्मा 'सरोज'ने शिव के विराट रूप का वर्णन करते हुए लिखा है जटा में गंगा को धारण किए, माथे पर भभूत, गले में नाग धारण किए साथ में गणेश, पार्वती, गाय और त्रिशूल सुशोभित हो रहे हैं। साथ ही डमरू बजाते उस पर भंग और फूल चढ़े हैं ऐसे शिव के दर्शन दुर्लभ हैं। कवि राख बनकर सदा उनके सान्निध्य में रहना चाहते हैं उदाहरण द्रष्टाव्य है।

'सीस गंगा, बिराजत, राजत मयंक माथे।
भ्राजत भुजंग ग्रीवबा, आसुतोष गाइगे॥
सोभित गनेस-गौरि, नन्दी त्रिसूल हस्त।
बाजत उम उमरू, नीलकंठ ध्याइंगे॥
भंग संग चढ़ा फूल, धतूरो पदाम्बुज पै।
दुरलभ पदारथ, सैज चार पाइंगे॥

बनिकें समसान की, राख पूत काऊ दिना।
अनंग- अरि भोले के, अंग लगि जाइंगे।।[9]

श्री निवास ब्रह्मचारी ने शिव के प्रचंड रूप को गर्जना के रूप में व्यक्त किया है, अर्थात उनके क्रोध के रूप को कवित्त के माध्यम से दर्शाया है। कवि कहते हैं कि चारों ओर बादल गरज रहे हैं, काले बादल में गर्जना भय का आभास दिला रही है। श्रीपति का आदेश पाते ही बिजली की चकाचौंध से सारी दिशाएँ चमकने लगती हैं और वर्षा होने लगती है। वर्षा से गोप, ग्वाल अति दुःखी होते हैं इस प्रकार प्रकृति के द्वारा शिव का क्रोध प्रकट किया।उदाहरण द्रष्टाव्य है।

कवित्त

''धायें चहुँ ओर सौं गरजत घमण्ड भरे,
बादर उतंग बुन्द बान झर लामे हैं।
जाय हैं न नैंकु ना अधामे बरसामे जल,
हैं कारे रंग बारे भय भोर दिखामे हैं।।
''श्रीपति'' चपला की चका चौंध चहुँ दिस में,
झूम-झूम मेघ घूम-घूम घिर आमे हैं।
पामे अति दुख गोप गोपी ग्वाल बच्छ गाय,
ब्रज में बरसा के फरसा से लखामे हैं।।''[10]

श्री यशकरण खिड़िया जी ने चौकड़िया अनुप्रास द्वारा भाव पक्ष और कला पक्ष का सुन्दर समन्वय कर वह शंकर जी से ज्ञान का प्रकाश और उन के सान्धिय क्योंकि जो उन के साथ रहता है उसे कभी भी दुःख नही होता।

''भूषण भयद भुजंग के, श्रवत सीस पै गंग।
शिवा संग जो रहत वह, करि है मम दुख भंग।
रैन बसेरा जगत में, अधिक अंधेरा साथ।
करहु उजेरा जान उर, निज कर चेरा नाथ।।'' [11]

श्री भंवरलाल तिवारी जी ने शिव की शक्ति को प्रस्तुत किया हैं हिमाचल पर्वत को सहारा देनेवाले, जान्हवी के प्रवेग को काबू में रखने वाले, त्रिनेत्र वाले, धन्य हैं वह नील जिन को वह कंठ में धारण किए हुए हैं।

''अदभुत स्वरूप वेश अद्‌भुत तिहारों शिव,
कठिन हिमाचल पै शक्ति कौ सहारौ है।
प्रबल प्रवेग जान्हवी को रोक पातौ कौन,
धारि उग्र रूप शीश तुम्हीने सँबारो है।
त्यागि सर्वलाज काज बिस्व हूँ विलासी भयो,
कुपति त्रिलोचन है काम कौ सहारो है।
हुए ना विभक्त रत्न दैव दानवों में जब,
धन्य नील कंठ कुंठ काल कूट धारौ है।''[12]

श्री पूरन लाल गहलौत जी ने शंकर जी के नाम की महिमा का गुणगान कर उन के लिए अपने प्रेम को प्रस्तुत किया। वह कहते हैं कि हे देव मुझे सिर्फ तेरा नाम ही प्यारा हैं माँ पार्वती के साथ तुम्हारें नाम का पुजारी हूँ जिसके साथ तुम्हारा नाम का सहारा हैं वह हर दुःखों, कष्टों से दूर रहेगा।

''जय जय प्रभु भोले नाथ हमैं, तौ तेरौ नाम पियारौ है।
माँ पारबती के साथ- हमैं तौ तेरौ... ।।
भस्मासुर नै तप कियौ धनौ वर माँग लियौ अति दुखदाई।
जाके सिर पै मै हाथ धरूँ हो भस्म तुरत प्रभु सुखदाई।।
धरनौ चहे शिव सिर हाथ-हमै तौ तेरौ... ।।
भागे शंकर दियौ कैसौ वर, बिनके पीछैं भागौ निश्चर।
घर विष्णु मोहनी गात -हमै तौ तेरौ... ।।''[13]

शंकर के प्रचड रूप के साथ-साथ उन के नाम और प्रवेगी रूप को बहुत ही सुंदर रूप में वर्णित किया है।

इसी प्रकार 'हनुमान' जी शक्ति के प्रतिक के रूप में पूंजे जातें हैं। उन की उपासना करते हुए **'श्री निवास बम्हचारी'** ने वीर-रस द्वारा वीरता का वर्णन किया है वे कहते हैं महावीर रावण को उसकी ही लंका में, उसकी करतूतों, घमण्ड का अन्त करते हुए यह सिद्धी कि जिस प्रकार रावण का घमण्ड टूट गया उसी प्रकार हर एक का घमण्ड कभी न कभी टूट ही जाता है।

हनुमत वल बंका बारिध कौ फलंका दै

कूद कहे रावण के मज्झ खल मण्ड में।
तेरी करतती का सपूती दस कण्ठ केती,
डिमड़िमी बजाय का गावत नव खम्ड में
है सब वीरताई सूरताई छार, छार,
करे ना सहाई जाके फरकै घमण्ड में
देहू अजहू जानकी जु जानकी खैर
नातौ उखारू तेरे प्रचण्ड भुज दण्ड मैं।[14]

''श्री नाथ'' से प्रार्थना करतें हुए **''बागरोदी बल्देव शर्मा 'सत्य''** कहते हैं कि अनाथों की रक्षा करने वाले, विपत्ति में पिता की तरह सही दिशा बताने वाले सत्य का साथ देने वाले श्रीनाथ की सेवा को ही सत्य माना है। जो धरती के मोह, माया, क्रोध को त्याग कर भक्ति में लीन हो जाता हैं। वही इस संसार के भवसागर को पार कर सकता हैं। केवट रूपी ईश्वर भक्त को इस संसार के मोह माया रूपी भवसागर से पार लगते हैं।

दीन ओ मलीन हीन सब विधि अनाथ हों,
ताकी नित रक्षा करि अपनो बनायौ है।
जब जब विपत्ति ओ धर्म के संकट माँझ,
आपके पिता सम मौय समझायौ है।
कोन है दयालू ऐसो प्यारे श्री नाथ बिन,
जाकी शर्ण छाड़िसत्य दूसरो सुहायो है।
एक पति वर्ण कियो एक ही शरण गही
सब विधि श्रीनाथ को सत्य गुण गायो है। [15]

'श्रीमती विद्यारानी' ने भजन के रूप में प्रभु को डूबने से बचाने वाले, विद्या का दान देनेवाले तथा काम, क्रोध, मद, मोह से रक्षा करनेवाले प्रभु को रक्षक के रूप में प्रस्तुत किया हैं।

प्रभु जानि कैं दासी उबारों हमें।
या भव सिन्धु में डूबि रही हूं नाहिन कोय सहारो हमें।
क्रोध मोह मद लोभ आदि ने निसदिन आय बिगारो हमें।

माता पिता सुत कुटुम आदि जग इक दिन सबाहिं बिसारो।
सुख में आय सभी हंसि बैठत दुख में करत किनार हमें।
स्वारथ हित सब प्रीति करत हैं मात पिता सुत दारो हमें।
फंसी रही माया बन्धन में प्रथमहि नाहिं बचारो हमें।
विद्याबती कहें कर जोरै माया ते करहू किनारो हमें।[16]

''**विद्यारानी**'' ने राम भक्ति करते हुए राम की मूर्ति की सुन्दरता का वर्णन करतें हुए कहती हैं कि प्रभु तुम्हारे चाँद जैसे मुख की कपूर की आरती करते हुए आप की भक्ति करती हूँ दूसरी ओर राम के गुणगान गाते हुए उनका मन उन की भक्ति में रिझ जाता हैं जिससे संसारी, मोह माया, क्रोध सब भुला कर सिर्फ राम नाम जपती हैं।वानगी द्रष्टाव्य है।

प्रभो मैं आरती करूँ तुम्हारी।
कंचन दियला कपूर की बाती बिच-बिच देऊँ सम्हारी।
जय-जय प्रबु सीता पति स्वामी जय भक्तन सुखकारी।
देखि चाँद मुख नाथ तिहारो आनंद कहालों कहारी।
विद्या आरत प्रेम सों गावे मूरति पर बलिहारी॥[17]

✻ ✻ ✻ ✻ ✻

सुनोरी सखी राम के गुन गाऊँ।
गाऊ-बजाऊ-रिझाऊँ राम को आनद उर न समाऊ।
राम गुन गाऊँ, गुपाल गुन गाऊँ दे दे तारी नचूं यहि ठाऊँ।
राम गुन गाऊँ, श्याम गुन गाऊँ पाऊँ-पाऊँ प्रेम-रस पाऊँ।
रामहि रिझाऊँ श्यामहि रिझाऊँ विद्या बलि-बलि जाऊँ॥[18]

देवों की तरह ही देवियों के विभिन्न रूपों का वर्णन किया हैं ''**श्री दुगेश नन्दिनी**'' द्वारा ने '**विद्यारानी**' जी की स्तुति की हैं उन की मूर्ति नैंन में बस गई हैं जिस से वह धन्य हों गई जिसके लिए मुनि ऋषि कठोर तपस्या करते हैं किन्तु माँ की कृपा उन पर हैं कुबुद्धि, त्रुटियों, पापों को हर कर सही दिशा प्रदान करने वाली हैं उन को छोड़कर वह कही जाना नहीं चाहती। उदाहरण द्रष्टाव्य है।

देवी तव मूरति नैनन मांहि।

बसहि निरंतर धन्य जासु के, को सम तासु लखाहिं।

जा सरूप कहँ देव मुनीस्वर लखिबौ चहि ललचाहि।

सूखमय सबहि सराहत नीकी उपमा कवन लगाहि।

सो तुव रूप अछेह छवियुत नित्य निरखि हरसाहि।

मैं कुबुद्धि, पापिनी छमिया त्रुटि कहत तुमहि सकुचाहि।

एक यह बड़ चाह बसै उर अन्तिम विनय सुनाहि॥

विधा बसौ नेह युत मम हिय अन्य न कछू चहांहि॥[19]

'सरस्वती जी' की वंदना करते हु **'श्री माघौप्रसाद'** कहते हैं कि वीणा को हाथ में ग्रहण कर जन मानस में बुद्धि का संचार करती हैं। जिससे मानव का मन-वाणी-विचार सब शुद्ध हो जाते हैं अर्थात बुद्धि प्रदान कर सद्बुद्धि देती हैं। इन्ही भावों को दर्शाति हुए लिखा है।

वीणा कर में ग्रहण कर जन में भर दै बुद्धि।

मन-वाणी और करम सौं मनुज होय सब शुद्ध॥[20]

* * *

वीणा नाद-निनाद सुन चर-अचराचर -झार।

ज्ञान सिंधु गोता लहै, सुनते ही झनकार॥[21]

* * *

मधव अग्य करहु विग्य आप प्रवीना।

झन-झन झंकृत वेद गुंजरत बज्रत वीना॥[22]

'श्री रामबाबू शुक्ल' सरस्वती की वंदना करते हुए लिखा है। मानव हृदय की पीड़ा का निदान कर ज्ञान के सागर का भण्डार सरस्वती इस संसार रूपी सागर में अज्ञानता के रूप में गोते खाते हुए मनुष्य को बुद्धि प्रदान कर रक्षा करती हैं कार्य में निपुणर्ता प्रदान करती हैं। उदाहरण -

मेरे हृदय में आय आसन लगाकै मातु,

अपनी पताका को ऊँची फहराइ दै तू।

पन्ना, पुखराज, मणि, माणिक, गोमेद, हीरा,

मेरी पद रचना में ढ़ंग सो सटा दै तू।
कीमत बढ़ादे मात वाणी की सुवाकवाणी,
बालक अपने की तुच्छ हटकौं निभा दै तू।[23]

श्री रामबाबू शुक्ल ने अपनी भक्ति को प्रस्तुत करते हुए समाज के विकास की कामना की हैं। उन्होंने सरस्वती वंदना द्वारा कहा हैं कि मेरे हृदय में आसन लगा कर माता अपनी विद्या की पताका फहरा दे। अपनी कृपा कर मेरी वाणी में इतनी शक्ति दे जो मुझ तुच्छ बालक का उद्धार करें। साथ ही देश और समाज की उन्नती मैं अपना योगदान दे कर देश का नाम करु मुझे ऐसी बुद्धि प्रदान करो । इस प्रकार सरस्वती से अपनी वाणी शब्दों पर कृपा कर पुष्पों की तरह सुन्दर संग्धित बनाने की विनंती करते हैं।

डॉ. हरदत्त शर्मा सुधांशु जी ने सरस्वती स्तुति करते हुए उन के चरणों में सदा स्थान प्राप्त करनें में की याचना के साथ सदा उन का साथ मांगा हैं।

मो मन मन्दिर मैं जननि सारद ! करौ निवास।
तव पद रज–रूचि–बास ते होय कवित्त सुवास॥[24]

* * *

मन–मन्दिर पावन करनि तव चरननि की धूरि।
मातु ! कहा अस्तुति करौं तव प्रभाउ है भूरि॥[25]

श्री रामबाबू रघुराय माँ भगवती की भक्ति करतें हुए लिखते हैं कि शक्ति की देवी, मुक्ति प्रदान करने वाली चारों और जड़ चेतन में समाई हैं। तू ही रक्षक और राक्षसों का भक्षक हैं। सभी तुझे पा कर धन्य हैं ऋषि मुनि तेरा ध्यान करते हैं जंगल में मंगल की तरह मन्त्र में जादू की तरह पूरी सृष्टि पर छाई हुई हैं धनाक्षरी-मनहर छन्द द्वारा सुंदर रचना की हैं।

तू ही मुक्ती दाता, महा सक्ति की विधाता तू ही।
तूही जड़ चेतन में चहुंधा समाई है॥
तू ही देव रक्षक औ भक्षक है दैत्यन कू।
सारदा सुरेश सेस पार नहिं पाई है॥
ध्यावत मुनीन वृन्द गावत गुनान बाद।

तेरी मूर्ति रघुराय उर में समाई है।।
जंगल में मंगल में जादू जन्त्र सन्त्रन में।
जै-जै जगदम्बा तेरी ज्योति जग छाई है।। [26]

श्री रघुराय जी ने माँ अम्बिका की वंदना करते लिखते हैं कि माँ तेरी शरण पा कर सब का कल्याण हो जाता हैं सिंह की सवारी करने वाली, मैं तो मन्द बुद्धि, पापी हूँ तुम माँ की तरह मुझे इस जंजाल से बचा कर इस माया रूपी संसार के भवसागर में से तू ही पार लगा सकती है मेरे अवगुणों को दूर कर मेरी भक्ति स्वीकार करो।

ऐरी ऐरी ओ सुरूपी सिंह बहिनी अमन्द ज्योति,
सरन तिहारी मात तू ही पार परियो।
मैं तो मति मन्द मूढ़, पापी भव सिन्धु परयो,
कोटिन जंजालन सो तू ही निस्तारियों।
तेरी ही सरन अब, जाऊँ छोड़ तोय कहाँ,
रघुराय लाज राख वैभव पसारियो।
मेरे औगुनन निज चित्त न चढ़ैयो अम्बु,
सर्व कल्यान करके कार्य मम सारियो।।[27]

'रघुराय जी' ब्रजभाषा के वरिष्ठ आचार्य कवि हैं इन्होंने काव्यानुशासन का अनुपालन में ही अनेक भ्रमसाध्य छन्दों का प्रयोग किया हैं जैसे अमृत ध्वनि छन्द का प्रयोग बहुत कम हुआ है किन्तु रघुराय जी ने इस छंद का कुशल निर्वाह करते हुए मां काली की वंदना की हैं जैसे

कालिय माँ रुद्रेश्वरी, सात दीप नो खंड।
विरन रही 'रघुराय' कवि जोति प्रचंड अखंड।।
खंडक्कर अरि संभु निसुंभन दैत्यन दलनी।
महिसासुर धूम्रेश चन्द्र मुंडन खल खलनी।।
रक्त बीज संहार भरत खप्पर दै तालिय।
जुग्गिन नच्चत कुद्दत भैरव हँस्सत कालिय।।[28]

छन्द सवैया चन्द्रकला (दुर्मिल) वंदना के स्वरों में प्रार्थना करते हुए अपने को

माँ के चरणों में समर्पित किया है।

इतवार रहै मम पूनं सदा, जग कीतिहु चंदहि सी छिटकी।
निज धामहि मंगल वास करैं बुध की प्रतिमा मन में अटकी॥
गुरू भी हम को जु अलभ्य मिले, घड़ि सुत्रक निवारत संकट की।
सनि सान्त सदाँ सुखदाइ रहै, 'रघुराय' कि अम्ब रखै घटकी॥[29]

श्री अक्षय सिंहरत्न जी ने जगदम्बा की वंदना करते हुए शक्ति का रूप प्रस्तुत किया हैं निर्बल को बल, शरण, धन देने वाली मुझें भी अपनी दया का पात्र बनने की कामना करते हुए लिखा है।

निर्बल के बल है श्री जगदम्बा।
अशरण शरण अधन के धन है आरत के अवलम्बा।
दुखी देव लखि सदैव पधारे, मारे शम्बु निशम्ब।
शरणागत पर करूणा धारत, टारत क्लेश कदम्ब,
किये अकंटक जन नसि बन्कट संकटके निकुरम्बा।[30]

ब्रजभाषा में सब देवी-देवताओं की भक्ति की जाए परंतु कृष्ण भक्ति के बिना यह अधूरा है। कृष्ण की विभिन्न लीलाओं प्रसंगो का वर्णन करते हुए ब्रजभाषा में दोहो, पद, छंद, और कवित्त की रचना की गई हैं।

सुदामा के प्रसंग को लेकर कृष्ण की भक्ति को बालभाव में रचा है **डॉ. रामानन्द तिवारी** ने सुदामा कृष्ण से मिलने जाते हैं और कृष्ण उन्हें और दोस्ती को याद रख उनका स्वागत करते हैं सुदामा गरीब होने के कारण उन सके घर जाने में संकोच करते हैं किन्तु वहाँ पर जाने के बाद खुशी से आँखे भर आती हैं।

एक दिन सुदामा विप्र कान्हा के जौरी गयौ।
पास में न अन्न वस्त्र मन में लजात है।
प्रेम सौ पसारि भुजा भेंट प्रभु सुदामा सौं।
दीन दीनबन्धु मिलन कैसौ सुहात है॥
सोने के सिंहासन पै चादर बिठायौ विप्र।
धोये पद करसौं सुदामा सकुचात है॥
सारी पटरानी आज चौंकि कैं बिलोकि रही।

ऐसी अति अद्भूत अनोखी नई बात है।।[31]

'जयशंकर प्रसाद' जय ने कृष्ण के चरणों में अपना स्थान बना लिया हैं उस के अलावा उन्हें कुछ याद नही रहता नयनों में उनकी मूर्ति बस गई हैं। हृदय और मन में श्याम ही बसे हुए हैं इस भाव को दोहा रूप में प्रस्तुत किया।

धरत ध्यान प्रभु पद कमल, सुधि भूली सी देह।
राखत नयन कपाट दै, सो मूरिति हिय गेह।।[32]

'नंद के द्वारे' में **'रामानंद तिवारी'** ने कृष्ण के दर्शन के लिए आतुर नयनों की अभिलाषा को सवैया के रूप में बहुत ही सुन्दर ढ़ग से प्रस्तुत किया हैं कवि कहते हैं नंद के द्वार पर कृष्ण के दर्शन की अभिलाषा में सब नर नारि आतुर है उन की मुरली की आवाज सुन कर सब अपना काम काज भूल जाते हैं। इन्ही भावों को द्रष्टाते हुए लिखा है।

बीत गयो दिन धेनु चरावत सांझ भये घर आय पधारे
दर्शन की अभिलाषा .बढ़ी हृदयातुर में नर नारि बिचारे
सुन के मधुरी मुरली धुनि कौ ब्रज के नर नारिन काज बिसारे
दरसातुर गोपिन ग्वालन की बहु भीर गई जुरि नंद के द्वारे [33]

कृष्ण का बचपन अत्यत ही मनमोहक रहा हैं। उन बाल लीलाए मन पर एक अनोखी छाप छोड़ जाती हैं जिन्हें कवियों ने ब्रजभाषा में सुन्दर रूप से रचा हैं। माखन लीला का सुंदर सजीव वर्णन करते हुए **'बलदेव शर्मा'** ने वात्सल्य भाव का सुन्दर वर्णन किया है।

'एक हाथ माखन है एक हाथ माट लियो,
मातु ढ़िंग आय धाम मोद ही बढ़ावे है।
भीजे रस मन आप गावत सु तान लेय,
छोटे से कन्हैया 'सत्य' निर्तत रिझावे हैं।'[34]

प्रेम की स्थिति में भक्ति को प्रस्तुत करते हुए **सत्य जी** कहते हैं। कि गोपाल की मूर्ति को देखकर मन मोहित हो गया है खाना-पिना छूट गया सोते जागते उन की याद आती हैं।

मूरति गुपाल देखि मोहित भयो है मन, खान पान छूटि नेन नीर ढरिवौ करें।

सोवत में जागत में पंथ पथेवारीन मैं, आठो याम हिये माझ पीर करिवो करें।
दिवस यो यामिनी में नेकहू न चैन परे, स्नेह की अधिकता में ध्यान धारिवो करे।
वेलि कवो रोवे कबो हसि विल्लता कबो, बैठ के इकान्त, सत्य बात करिवो करें।[35]

आधुनिक ब्रजभाषा काव्य में परम्परित रचनाधर्मिता को महत्व देते हुए विषयवस्तु में हर सामायिक सोच को प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुति में जिन परम्परति छंद का प्रयोग होता रहा हैं उनमें मुख्यरूप से धनाक्षरी कवित्त, सवैया, चौपाई, दोहा, सौरठा, बरवै आदि का प्रयोग होता रहा हैं।

काव्य में मुक्तक तथा प्रबंध दोनों ही रूप रहे हैं। मुक्तक छन्द संयोजन के अन्तर्गत कुछ प्रबंधात्मक कृतियों की रचना पहले भी हुई थी तो आज भी हो रही हैं सूरदास जी का समग्र सूर साहित्य केन्द्रित रहा, इसी प्रकार नरोत्तम दास रचित सुदामाचरित तथा जगन्नाथ दास रचित उद्धवशतक एवं अष्टछाप के कवि नन्ददास आदि के द्वारा रचित भ्रमरगीत आदि इसी रूप को प्रस्तुत करते हैं।

श्री नाहरसिंह ठाकुर जी ने भक्ति और शृंगार का सुंदर समन्वय किया हैं उनकी मूल अवधारणा तो श्री राधा कृष्ण के प्रति अपनी श्रद्धा भावना हैं।

किंतु राधाकृष्ण के लीला विलासों की सहज अभिव्यक्ति भी उनका ध्येय रहा हैं वह राधा को जब एक नायिका के रूप में व्यग्रावस्था में प्रस्तुत करते हैं तब भी नायिका की प्रतिक्षातुर भावना में की बाँसुरी की धुन सुनने की सम्मोहन अवस्था सामने आती हैं

पास बैठ राधा प्रिया, कलस धरे दे कान।
स्याम बाँसूरी बाजि है, तन मन मोहत तान॥[36]

इसी प्रकार कृष्ण के रूप सौंदर्य से मोहित हो, रास करते हुए कुंजन में झूला झूलते हुए आदि अनेक रूपों से मोहित हो राधा कृष्ण के मनोहर रूप द्वारा कवि ने अपने पदों में भक्ति के पुट को प्रस्तुत किया हैं **श्री नाहरसिंह** ने बहुत सुंदर रूप से कृष्ण को यशोदा का लाल बताते हुए राधा के हृदय का चोर बताया है । उदाहरण

मोर मुकुट मुरली सुमुख, पहर कटि पट पीत।
लट कपोल माला लखत, राधे रीझन रीत।
लाल जसोदा लाड़िले, नटवर नंद किसोर।

गोपी नाथ गुपाल हो, चित राधा नित चोर॥[37]

इसी प्रकार एक सवैया जिस में राधा-कृष्ण के प्रेम द्वारा **नाहरजी** ने अपने भक्ति भाव को प्रस्तुत किया।

मुसकावत माधव राधा मिले, छबि रूप दूहून छटा छहरैं।
मुरली पर नाचत तान मिला, झमकें झुकि झाँझरिया झहरें।
ललचावत लोचन लंक लुला, लखि प्रीतकी हिय बढ़ी लहरें।
गिरिराज गुफान की गैलन में, ठिठकें चित्त नाहर के ठहरें।[38]

श्री गोपाल प्रसाद मुदगल जी ने कृष्ण राधा को एक दूसरे का पूरक बताते हुए भक्ति को प्रस्तुत किया हैं बसन्त ऋतु के माध्यम से कृष्ण राधा के प्रेम को प्रश्नात्मक रूप में रचा हैं। वे कहते हैं कि राधा का बसंत जैसा रूप ना होता तो कान्हा भौंरे की तरह ना मडँराते? बांसूरी ना बजातें?

राधा सौ बसन्ती रूप, हो तौ न आवनि पै तो, कान्ह बन भौरा कहो, कहाँ मँडरावतौ?
झूम-झूम अँगना बसन्ती नहीं नाचती तो, गुन-गुन धुनि कौन, बाँसूरी बजावतौ?
हौलै-हौलैं झालौं दे बुलाती न चन्दनिया तो, साँवरो सलौनो कहौ, कौन गुन गावतौ?
हिय में उठतौ कौन, नित नव मंजु भाव, जो पै अलबेंलौ ऋतुराज नहीं आवतौ?[39]

श्री वरुण-चतुर्वेदी जी ने होली के माध्यम से कृष्ण राधा के प्रेम द्वारा भक्ति को प्रस्तुत किया राधा कृष्ण को हाथ में रंग लिए लगाने जाती हैं किंतु उन को देखकर रंग भूलकर उन के रंग में रंग जाती हैं। उदाहरण -

स्याम सौ खेलिबे होरी चली सखि, राधिका नै बहुरूप बनायौ।
गालन खूब सुरंग लगाइ, हौवे सोच कैं हाथ में रंग दुरायौ॥
मोहनि मूरत देखी जु स्याम की, रीझ गई मन सांवरौ भायौ।
हाथ कौ रंग तौ हाथ में रह गयौ, स्याम कौ रंग हिये में समायो समायी।[40]

कृष्ण के प्रेम में राधिका सुध-बुध खो गई हैं वह गली-गली हर जगह कृष्ण को ढूढ़ रही है यहाँ **श्री वरुण चतुर्वेदी जी** ने विहरणी राधिका की स्थिती को प्रस्तुत करतें हुए अपने भक्ति भाव को प्रकट किया है वे कहते हैं कृष्ण की बाँसूरी ने राधा का मन हर लिया हैं वह बावरी सी कुंजों में उन्हें ढूँढ़ रही कभी उनके घर जाकर पूछती हैं कभी वन में, भूख प्यास मिट गई हैं सिर्फ राधा का शरीर ही राधा के पास हैं मन

तो कृष्ण ले गये हैं।

बाँसुरिया चित चोर गई, फिरै राधिका बौरी सी कुंजन में।
कबहुं घर स्याम के बूझत है, फिर जाइकैं देखत है वन में।।
भूख गई अरू प्यास गई घनश्याम कौ ढूंढ़त है घन में।
तन ही तन राधिका पास रहौ, मन जाए बस्यौ मन मोहन में।।[41]

श्री रमेशचन्द्र चतुर्वेदी जी, ने राधा से मिलने के लिए कृष्ण किस तरह रूप बदल कर मिलने जाते हैं उस को 'लिलहरी' में सुंदर रूप से रचा हैं।

श्री राधे सौ भेंट की चाह भई,
तब श्याम नई यहै राह निकारी।
बंसी किरीट छिपाय लिए,
तब कृष्ण ने रूप धरयौ लिलहारी।
लहंगा तो पहरि लियौ हरि ने,
सिर ओढ़ि लई अति सुंदर सारी।
करि सोलहू सिंगार लिए,
नंद नंदन की छवि पै बलिहारी।।
लरकाई न छोरी लला तुमने,
अब बात गई जो रही तब की।
तुम मारग रोकि रहे हो लला,
तजि के मरजाद अरे सब की।।
इन ही गुन पै तो बंधयो करते,
कछु यदि रही ना तुम्हें जबकी।
वर जोरी करी लर तोरी लला,
यह बात खूलैगी अबै अब की।।[42]

इसी प्रकार भक्ति-भाव को स्वकीया प्रेम के रूप में राधा कृष्ण के श्रृंगारिक प्रेम के माध्यम से बहुत ही सुंदर ढ़ग से विविध कवित्त, सवैया, पद और दोहों छन्द के माध्यम से प्रस्तुत किया।

इसी तरह कवियों ने परकिया के माध्यम से भी भक्ति-भाव प्रकट किया है

जिसमें गोपियाँ कृष्ण की नायिका के रूप में हैं।

श्री हरिप्रसाद शर्मा 'हरिदास' जी ने गोपी वचन द्वारा कृष्ण गोपी को वन में रोक रहे हैं और गोपी अपने को दासी बता रही हैं। इसको इस प्रकार लिखा है -

लालन मत झगरौ तुम बन में।
ठीक नही मनमोहन प्यारे, रोकत हो निर्जन में।।
प्रगट होयगी प्रति लाज जू, लगी हमारे तन में।
हम तौ दासी तिहारी 'हरिजू' बसौ हमारे मन में।।[43]

श्री अक्षयसिंह 'रत्न' जी ने अपने भक्ति भाव को कृष्ण की बांसूरी की आवाज से मोहित हो ब्रजबाला उनके रंग में रंग गई हैं। भक्ति को श्रृंगारिक अभिव्यक्ति देते हुए यह कवित्त की रचना की हैं।

कलिन्दी के कूल बेलि विपट सु पुन्ज में,
कूंज्ञन में मंजु घटा शरद जम्हाई है।
निरखि कन्हाई जन्त्र आकर्षण मंत्र मयी,
सुधारस माधुरी सु बांसुरी बजाई हैं।
सुनते ही देह गेह सुधि बिसराई अहौ,
अक्षय अछेह ही सनेह सरसाई है।
जंगलौ रिसाल सी उमंगि नन्द लाल पै,
रंग मतवाला ब्रजबाला सब धाई है।[44]

श्री आनंदीलाल वर्मा जी ने कृष्ण के प्रेम में गोपियां सबकुछ भूल गई और वह उस से मुक्त होनें के लिए रास्ता ढुढ़ रही हैं गोपियों के प्रेम को भक्तिस्वरूप में प्रस्तुत किया हैं गोपियां कहती हैं।

राह में गोपी गुपाल सौं बूझति,
मुक्ति की युक्ति बताऔ मुरारी।
श्याम कही इहि गैल परी रह,
जामिंगे संत महा तप धारी।
उड़ि-उड़ि माथ लगे ब्रज की रज,
है जाय सहजहि मुक्ति तिहारी।

सब मोद भरे ब्रज की रज में

ब्रज की रज की महिमा अति न्यारी॥[45]

श्री किशनवीर यादव ने कृष्ण के मनमोहक सौंदर्य का वर्णन करते हुए चित चुराने वाले वृषभानु के पुत्री का वर्णन किया है। उदाहरण-

सीस सुहावत मोर पखा बँसुरी कर में कटि की छबि न्यारी॥
स्यामल गात लुभात सबै चित चोरत हैं अँखियाँ कजरारी॥
रूप सरूप अनूप दिपै लखि कोटिक देबहु हैं बलिहारी।
या छबि सौं मन माहिं बसे वृषभानु सुता संग में बनवारी॥[46]

'यादव जी' शृंगारिक भक्ति के रूप में अपनी नींद गवाँ बैठे, खाने-पीने की सुध नहीं सब कुछ भूल गए हैं इस प्रकार भक्ति के रस ने मन को मधुशाला में डूबो दिया है। उदाहरण द्रष्टाव्य है।

जा दिन सौं आपकी हमारी मुलाकात भई,
मेरी नींद वाही दिना सौं भई हराम है।
खाते-पीते-सोते अरू जागत न चैन परै,
भोर औ दूपैर होय चाहै होय शाम है।
त्यारौ गदरायौ गात मोय मधुशाला लगै,
नैनन के प्यालेन सौं छलकत जाम है।
त्यारी मतवारी प्यारी अदान पै वारी जाक त,
रूप के खजाने कूँ प्रनाम है – प्रनाम है॥[47]

ब्रजभाषा साहित्य में विविध विषयों पर लिखा गया हैं। जैसे भक्ति, शृंगार, प्रकृति, देवी-देवताओं आदि इसी तरह भारतीय संस्कृति के विविध पहलुओं में से त्यौहारों का भारतवर्ष में अत्याधिक महत्व रहा हैं जो कवियों की कलम ने इस को भी अपनी भाषा और प्रतिभा से पाठकों के हृदय को गद्गद् किया हैं विभिन्न त्यौहारों में से होली का त्यौहार रंगों के साथ लोगों के प्रेम से भी रंगा है यह हर जगह विभिन्न तरह से खेली जाती है। ब्रज क्षेत्र में तो श्रीकृष्ण की सन्निहिती के कारण होली का अपना ही महत्व है।

होली को हर जगह अलग-अलग तरह से भी मनाया जाता है पोलेन्ड का

'आरिशना', 'इटली का रेडिका, जर्मनी में 'इस्टर', चीन में 'च्वेजे', बर्मा में 'तेच्या', चोकोस्लोविकिया, में 'बेलिया', अफ्रीका में 'ओमेना बोगा' आदि नामो से होली की तरह त्यौहार मनाए जाते हैं। सभी स्थानों पर होली का त्यौहार कैसे भी मनाया जाय किन्तु सब इसकी मादकता में सरोबार हो रसमग्न हो जाते हैं।

राजस्थान के ब्रजभाषा साहित्याकरों ने इसी उमंग, उल्लास और रंग को विविध तरह से व्यक्त किया हैं।

'श्रीनिवास ब्रह्मचारी' जी ने कवित्त के रूप में बरसाने की होरी में कृष्ण के सुन्दर रूप और होलीके रंगों को ग्वाल-बाल के साथ रंगते हुए बताया हैं।

सोहै सीस मोर पच्छ पीट पट बारो प्यारौ।
पटुका की फैट में गुलाल भर लीयौ है॥
कर पिचकारी भाल चन्दन की खौर दई।
बाजै ढ़प ढ़ोल गोल ग्वालन को कीयौ है॥
'श्रीपति' अबीर झोरी केसर कमोरी घोर।
मोर भय होरी को खिलार चल दीयौ है॥
गावत धमार होरी गोरिन रिझावै नाचैं।
आज वृषभान पौर रंग भर दीयौ है॥[48]

इसी प्रकार **निवास जी** ने होली के माध्यम से देश में हो रहें खून-खराबे की और ध्यान आकर्षित करते हुए कवित्त के माध्यम से होली को **'भयानक रस'** में प्रस्तुत किया हैं वे लिखते हैं।

बम्वन के कुम कुमा चलैं देस मांहि नित्य।
मारी वन्दूकन लेकें पिचकारी छोरी है।
गन्धक पुटासलै अबीर की मचाई धूम।
आग की लपटन गुलाल झक झोरी है॥
'श्रीपति' लूट मार हुरयार हुर्दगं करैं।
जनता के जीवन की दुगर्ति न थोरी है।
मौत की धमार गावत पूजा की ढौर ढग।
संत और मेहन्त खेलें खूनन की होरी हैं॥[49]

श्री प्रभुदयाल 'दयालु' जी ने कृष्ण-राधा की मनोहर जोड़ी नंद के आंगन में होली खेल रहे हैं, साथ ग्वाल बाल भी हैं। इस मनोहर दृश्य का सुंदर वर्णन करते हुए इस प्रकार कहा है -

भवन के अङ्क में विछाय परयंक एक,
बैठे नंदराय अङ्क जोड़ी श्याम गोरी है।
सुखमा सदन दिपै वदन मदन कौसौ,
मानो विधि सृष्टि छवि इन पै निचौरी है।
आये सब गोप ग्वाल, खेलवे फाग ख्याल,
लम्बे लम्बे लठ हाथ रोरी की झोरी है।
मनत 'दयालु' जब लगन गुलाल लागी,
हर्ष मई ध्वनि छाई, आज रंग होरी है।[50]

श्री हीरालाल जी ने श्रृंगारिक रूप से होली का वर्णन किया है।

प्यारे घर आबन कौ, पाबन संदेसौ पाय,
प्यारी आँगन अनन्द, नद लहरायौ है।।
प्रीतम के संग फाग, खेलन उमंग बढ़ी,
केसर गुलाल लाल, ग्वालिनि मंगायौ है।।
थोरि-थोरि गागरि में, नागरि नलीले रंग,
बोरि-बोरि साँवरे कू, सौलनौ बनायौ है।।
स्याम-स्याम लीला लाखे, हरष कहे गोपी न्यों,
फागन मन भावनौ, भागन ते आयौ है।।[51]

श्री गोपाल प्रसाद मुदगल जी ने 'ससुरार की होरी' में ससुराल की होली का व्यंग्यात्मक रूप में प्रकट किया है।

फागुन में ससुरार सुहाबत, खैचत है ससुरार की होरी।
भावन है ससुरार की पौरि, सुभावत है ससुरार की गोरी।
लागत लौनी सी सास हमें, सलौनी सी लागत खीर कटोरी।
धोरत है मन में रस ही रस, मीठी लगै ससुरार की होरी।।[52]

इसी प्रकार **'श्री रामबाबू शुक्ल'** जी ने भी व्यंग्यात्मक रूप से जेठ, ससुर, भाभी के माध्यम से होली का व्यंग्यात्मक रूप का वर्णन किया हैं।

होरी कौ उत्पात लखि पजरत है मम गात,

जेठ ससुर हू कहत हैं तू भाभी कित जात।

तू भाभी कित जात बात सुनजा इक मेरी।

छोटी तेरौ कंत भरै नहीं तबियत तेरी।

कह गिरिराज प्रवीन नाहि यामें कछु चौरी।

है फागुन कौ मास खेल जा हम संग होरी॥[53]

श्री नत्थुलाल चतुर्वेदी जी ने होली के माध्यम से गांधी जी के सिद्धांत सत्य, अहिंसा का रास्ता दिखाते हुए एकता का संदेश दिया हैं।

सत्य को गुलाल ले, अहिंसा की गारी दै,

भारत की सारी, प्रेम रंग मै रँगाय दै।

स्वारथ की लाकरी में धरम की आगि दै,

नीति के कबीर गाय, धांधली भगाय दै।

होरी कै री कीच बीच, पाप कौ पछारि कै,

भारत में भ्रात- भाव सब में जगाय दै।

ऐ री ए विभावरी, तू दूर-दूर जाय-जाय,

देश की स्वतंत्रता में होरी सी मचाय दै॥[54]

श्री गजेन्द्रसिंह सोलंकी जी ने होली का वर्णन करते हुए देश प्रेम की भावना को प्रकट किया हैं।

आऔ होरी के रंग में रंग जावेंसिग लोग,

और रंग दव जावे देस-प्रेम-चमकै।

कस्मीरी केसर हिम श्रंग कौ धवल रंग,

खेतन कौ धानी और नीलौ सिंधु कौ दमकै॥

गगन में उडावै गुलाल और अबीर ऐसौ,

फागुन में सामन कौ बदरा ज्यों झमकै।

भीज भिजावै सरावोर होले अंत सतक,

गुंथ जाते ऐसौ नहीं कहूं पैरऊ ठमकै॥[55]

'श्री गौरी शंकर आर्य' जी ने होली के दोहें में शृंगारिक छवि को उभारते हुए

ब्रजभाषा में सुंदर रचना की हैं। गुलाल का रंग गोरी के रंग को निखार रहा हैं।

गोरे तन इत उत परी, यो गुलाल खिल जाति।

बलखायी ज्यों नग जड़ी, कनक छरी दरसाति ॥[56]

*** * * * ***

कारे दृग कजरा भरे, मुख पै मली गुलाल।

केसूला के फूल ज्यौं, दीसैं गोरी गाल।[57]

'श्री बनवारीलाल सोनी' ने होली की उंमग के साथ आम आदमी की विडम्बना को दर्शाया हैं कि होठों पर तो गीत होते हैं लेकिन मँहगाई में यह होली दिखावा लगता हैं बड़े घर के लिए यह त्यौंहार हैं तो दूसरी और आम आदमी के लिए मार। उदाहरण द्रष्टव्य है -

होरी के त्यौहार पै, सीत जातु है बीत।
तन में कस्तुरी बसै, औ होटन पै गीत ॥
और होटन पै गीत, ढ़ोल पै थाप परत है।
मँहगाई की मार, बुद्धि अब घास चरत है ॥
कहि सोनी कविराय, मरस्नित जारि-जारि गोरी।
गली मुहल्ला छोड़ि, बरै घर-घर में होरी ॥[58]

डॉ. त्रिभुवन नाथ चतुर्वेदी जी ने भी होली के वर्णन में आधुनिक युग में पुलिस की लाठी, आँसू गैस, गोली के द्वारा जनता के साथ खेल रहे होली के रूप में दर्शाया हैं जहाँ रंग ना हों, कर लाठी गैंस हैं। जो लोगों के उमंग को मातम बना देता हैं।

होरी के लक्कड़न के बरिबे कौ धूम नाँच,
अश्रु गैस गोलन ते निकसी घूम धौरी है।
नाँच पिचकारी की मनभावना कुहार मैं,
पुलिस जल धारन लै करै बरजोरी है।
होरी हुरियारन कौ हुल्लड़ अरू सोर नाँच,
पुतरा फूँक मन्त्री कौ, हाय हाय हो रई है।
तू कहै होरी अवत बरस में एक बार,
अब तौ नगर में, होय दस बार होरी है।[59]

इस प्रकार होली के रंगात्मक रूप के साथ होली और आज के समाज की स्थिती का भी चित्रण किया हैं भारत में त्यौहारों का अलग ही रंग हैं रक्षाबंधन भाई बहन के प्रेम का त्यौहार हैं।

होली के अलावा उन्होंने रामनवमी, जन्माष्टमी, हनुमान जयन्ती और परशुराम जयन्ती आदि पर भी लिखा है।

पं. रमेशचन्द्र भट्ट 'चन्द्रेश' ने रामनवमी के सुंदर वर्णन के द्वारा शुभ दिन को परिलक्षित करते हुए कहते हैं कि -

दीनन के दीनानाथ कौसल्या के चांद प्यारे,
शुभ दिवस राम नवमी उंमग आई
मोद भरि दिखावै भाव हाव शिशुता के हियौ
तानी छवि छहै हैं धनुइयां बान हरिसाई।।
अमित प्रकाश युत हिय में भरत खुशी बहु,
भानु कांति वारौ सियाराम की दुहाई।
मनत चन्देश कवि झूलन कौ हार है बू तो
अपने प्रिय राम की गाये हम बधाई।।[60]

दिवाली का त्यौहार दीप की चमकती रोशनी और राम आगमन की खुशी को अपने शब्दों द्वारा **'चन्द्रेशजी'** ने लिखा है।

दीपवन की अवलि लै सुधा सी भरी हों
सोलह सिंगार करत रितु सत शकली है।
मोती मणि भरकत थारन संजोग सब लैहि
हाथन संवार चली ये नव बिहापली है।।
जगमग जग ज्योति दमकति दीप घर हों
डगर डगर मध्य फैली उजियाली है।
मनत चन्द्रेश कवि ए हों मान होत ए
लौट घर आये राम मनाओं आज दिवाली है।।[61]

जन्माष्टमी पर धनाक्षरी लिखते हुए **'श्री राम बाबू रघुराय'** ने कृष्ण जन्म की महिमा का वर्णन किया है।

टूटे है सकल बन्द बन्दी द्वार खूटे सभी,
अर्द्ध रात जात लख्यौ, कौतुक नवीनो है।
झिरन छिरावें मेघ पुष्प बरसावै देव,
सबै रिद्धि-सिद्धि याके, घट वास कीनों है।
दरस करत देव, दारा झुक झूँम झूँम,
'रघुराय' कलाधारी सोडस प्रवीनों है।
भूमि भार हारिवे को कंस मान मारिवे को,
भक्तन उवारवे कू कृष्न जन्म लीनौ ॥[62]

तीज के त्यौंहार पर झूला झूलती औरतों के उमंग उल्लास का वर्णन करते हुए **'श्री रामबाबू रघुराय'** लिखतें हैं।

तट यमुना के आज तीजन तयारी लखी,
चन्द्रमुखी चाँदनी सी करत किलोलना।
झूलना में झूलें झूमें, झुक-झुक झोटा देत,
सुरन मिलाय गीत गावन अमोलना।
मंद मुसकाय हिय, हरस बढ़ाय बेग,
कवि रघुराय संग बैठत खटोलना।
पैगन चलाय ज्वाल, मदन जगाय आय,
वारी वैस वारी-वारी झूलत हिंडोलना ॥[63]

राजस्थान के आधुनिक ब्रजभाषा कवियों ने काव्य के परम्परागत रूप भक्ति, श्रृंगार और प्रकृति के विषयों के साथ-साथ समय के बदलतें रूप को अपनाते हुए आधुनिक विषयों पर भी रचनाएं रची जिस में आधुनिक युग से जुड़ी समस्याओं की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित किया। हास्य व्यंग्य परक रचनाओं के साथ पैरोड़ियों के द्वारा विषयों को प्रस्तुत किया जिस से पाठकों के मनोरंजन के साथ-साथ आधुनिकता से सम्बन्धित राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक बदलाव को ब्रजभाषा द्वारा प्रस्तुत किया गया।

श्री जयशंकर प्रसाद चतुर्वेदी जी ने समाज में फैल रहे राजनैतिक भ्ष्ट्राचार की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए राजनेता के स्वार्थ को दर्शाते हुए उन के ऊलजलूल

भाषण, दलबदल की प्रवृत्ति आदि को इस प्रकार लिखा हैं।

जोर जोर सौं दै सकै, भासन ऊल जलूल।
नेता पक्कौ है वहीं राखै नाहिं उसूल।
राखै नाहिं उसूल, करै अपनी मनमानी।
झटपट दल कौं बदल भरै निज स्वारथ धनी।
कह संकर कवि नेह करै जो तोर फोर सौ।
अफसर पै लद जाइ, बोल जो जोर जोर सौ।[64]

राजनीतिक क्षेत्र में लोग स्वार्थी हो गए हैं अपनी कुर्सी के लिए वह कुछ भी करनें को तैयार रहते हैं देश का हित सिर्फ भाषणों तक ही सीमित रहता हैं। कथनी, करनी में विभिन्नता होती हैं इसी को ध्यान में रखते हुए **'श्री हीरालाल शर्मा 'सरोज'** ने 'गद्दी के भूखे' शीर्षक दे कर नेताओं की गद्दी के लिए भूख को दर्शाया हैं कि किस तरह वह दिखावटी चोला पहनकर लोगों को बेवकूफ बनाते हैं।

चोला बदलन की तुम्हें, परी पुरानी चाट।
ताही सों करते फिरौ, सदा काट अरू छाँट॥
सदा काट अरू छाँट, स्वाँग भारी भरते हौ।
बचन पुराने तोरि, घात घटिहा करते हौ॥
कलई सकल खुलि गई, सम्हारौ झण्डी झोला।
दिल्ली लगै न हाथ, भौत तुम बदले चोला॥[65]

देश की उन्नति के लिए नेता आज विभिन्न योजनाएं बना रहें हैं किन्तु सिर्फ वो फाईलों कागजों में ही दब कर रह गई हैं। समाजवाद का नारा देकर जनता को भ्रमित किया जा रहा हैं एक दल दूसरें दल से लड़ रहें हैं और जनता उस का निशाना बन रही हैं लोगों के दुःख को नेता नहीं देख रहें अपने स्वार्थो में लगे हैं इस से व्यथित हो **श्री राधाकृष्ण 'कृष्णजी'** ने लिखा है।

सोच-सोच हरि सकल नेता निहारै नैन,
आजादी कहा महा ऊधम सौ मचायौ है।
कृष्ण कवि आज तक सफल ना भयौ कोऊ,
विफल भई योजना खोज यही पायौ है।

गायौ है समाजवाद वद अपवाद कोरे,
भोरे भारतीन को विपथ में भ्रमायौ है।
खोटन की ओट खूब नोटन सौ,
वोटन सौ चोटन सौ भारत को भूरता बनायौ है।[66]

जनता के वोटों का महत्व हैं उसी के आधार पर सरकार का टीका रहना संभव हैं। इसी महत्व को दर्शातें हुए **श्री गोपाल प्रसाद मुद्गल** जी ने नेताओं की आँखें खोलने का प्रयत्न किया जिस में लिखा हैं कि जो जनता अपनें वोटों द्वारा जीता सकती हैं उसी को अगर नजरअंदाज किया जाए तो वह पाँच साल तक रहने ना देगी।

हमनै जिताये फिर, गादी पै बिठाय दिए,
सेवा कर जाईगे तौ, सीस पै चढ़ाइगे।
अपने ही अपने जु पेटन मल्हाते रहे,
जनता की नजरन, बेगि गिर जाइंगे।
जोड़-तोड़ मेई कहूँ, समै कूँ बिताते रहे,
एक दूसरे की टाँग, खीच जो सिहाइगे।
फूलदान जे सजाए, कूड़ेदान डारे जाय,
पाँच साल बाद फिर लौटिकै न आइंगे।[67]

सत्ता के लोभी नेता धीरे-धीरे देश को खोखला कर रहे हैं दल-बदल, चमचागीरी इस ने राजनीति को भष्ट्र कर दिया हैं। इसी को दोहो के रूप में व्यंग्यात्मक रूप से **'श्रीबालकृष्ण थोलम्बिया'** जी ने 'नेता' तथा दल-बदल 'शीर्षक' द्वारा प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि

चाटुकार चेले चलै, चमचे चारों ओर।
चामीकर चाँदी चहै, चामचोर सिर मोर।।[68]

* * * * *

जनता जन तामें करै, कहा मूढ़ा विसवास।
जो जन पल-पल दल बदल, घात करै विसवास।।[69]

राजनीति को हर समस्या की जड़ बताते हुए व्यंग्यात्मक रूप से राजनेता की पोल खोलते हुए **'पं. रमेशचन्द्र भट्ट'** जी ने 'छक्क' शीर्षक देतें हुए सफेद पोश नेताओं

की तस्वीर प्रस्तुत की हैं।

महंगाई मत देख तू ई बोटन कौ राज।
धोती कुरता पहिन कैं बन जा नेता आज॥
बन जा नेता आज, बस पहिचान भई है।
खैंच पइसा रिश्वत जित्ती सांचौ नेता वही है॥
कह चन्द्रेश जदि राम राज धरती ते उठ जागो।
सांच-सांच बता दै फिर तू माँही बायौ॥[70]

* * * * *

ध्यान लगाय क तुम सुनौ गधा सृष्टि में श्रेष्ठ।
पैर छोटे कान लम्बे ज्यो होबै सुत कनेष्ठ॥
ज्यों होवे सुत कनेष्ठ, सुनता है सबकी
पीटौ कोई कित्तौउ पर करता है वो मन की।
कह चन्द्रेश दन्नाय बोटन में रहे जीत ये गधा,
बूथ कैपचर करकरकै दल बदलू सीधे सधा॥[71]

राजनीति के कुरूक्षेत्र को व्यंग्यात्मक रूप से प्रस्तुत कर कवियों ने नेताओं के कार्यों की पोल खोली हैं इसी प्रकार ब्रजभाषा काव्य में हास्य व्यंग्य के महाराथी **'श्री धनेश फक्कड'** जी ने राजनीति में चमचा धर्म के नाम पर बढ़ता आंतक, वोट, कूर्सी के बीच निम्न और मध्यम वर्ग पीस रहा हैं इन्हीं बातों को दर्शाते हुए उन्होंने लिखा है।

राजनीति नाव देस की डुबो रही है आज,
आपते उमीद ही कै पार पै लगाओगे।
देस तौ तिलासै तामें सूर ओ निराला पंत,
अरू आप इनके ही नाम कूँ डुबाओगे॥
आग ने लगाय के आग है रहे हो बाग-बाग
का पतौ हौ एकदाग आप हू लगाओगे।
है गये जो प्रश्न समाप्त चार दिन पाछै
आप मंच पै चढ़े का झुनझुना बजाओगे॥[72]

ब्रजभाषा साहित्य में परम्परागत भक्ति, शृंगार के साथ-साथ आधुनिकता के साथ नयापन भी दिखाई देता है जिसमें **नीति परक दोहे** मुख्य रूप से दिखाई देते हैं जिस में कवियों ने देश में फैल रहे भ्रष्टाचार, बेईमानी, मिलावट, शोषण, असमानता और छूआछूत आदि जैसे विषयों को ब्रज भाषा में रच कर ब्रज काव्य साहित्य के विषयों की तथ्यभूमि को विशाल रूप दिया हैं और लोगों को सत्यार्थ के दर्शन भी कराये हैं।

'फक्कड़' जी ने अपनी कविता 'खोयौ-पायौ' के माध्यम से हमारे गिरतें हुए नैतिक मूल्यों की ओर संकेत किया हैं। सब के हृदय में नेंकी की जगह द्वेष ने घर बना लिया हैं दया की जगह हिंसा आ गई हैं बातों से मिठास गायब हो गई हैं।

हम कूँ आज गिनाओ भैया का खोयो का पायो।
मानस मन में प्रीति निकरिगई डेरा द्वेष जमायो।
बातन में मिठास अब नापने करकस कंठ कमायौ।
भरयौ गुमान मान के बदले राकस रूप बनायौ।
दया न नेंक रही हिरदे में हिंसा नेह समायौ।
गरक गयौ सत कौ बेरा पोते-झूठ तैरायौ।[73]

'श्री नत्थूलाल चतुर्वेदी' जी ने दोहे के रूप में नीति परख दोहों की रचना की हैं जिस में उनकी प्रतिभा के साथ-साथ इन्होने ब्रजभाषा काव्य में व्यंग्य के साथ-साथ छुटपुट हास्य के प्रसंग भी प्रस्तुत किए हैं इनके व्यंग्यों में सामाजिक संचेतना के संकेत मिलतें हैं तथा नीतिपरख आचार संहिता के निर्देश भी दिखाई देते हैं इनके कुछ दोहे इस संदर्भ में द्रष्टव्य हैं।

चूहन ते यारी करी, लत्तन कूँ कुतराय।
देख्यो नयन तरेर जब चूँ-चूँ करि बतराय॥

जान सुमाउ न कोउ तजै, केतक सुधरो होय।
सज्ञन ते सद भावना, नीच निचाई होय।।

रे मति-मन्द न भूलिकै, नीचन को संग लेय।
तन जारै बुधि-बल हरै, हाथ साफ समुख देय॥

जो सुख चाहै आपनौ, तजै नीच को संग,

कीचड़ में जनि पग धरौ, जानि दलदली रंग ॥
नेतन को संग छाड़ि दै, कबहुंक धोखो होय।
ऐसौ गरत गिरायगो, न कबहुं उबारौ होय ॥
मिसरी संग नीकौ लगै, दूध मलाई दोय,
गुर डारत हीकन लगै, मनुआ खावत रोय ॥
क्रूर नृपन के राजह में, सुक्स प्रजा कौ नांय।
पंछी सूखे सरन तजि, उढ़ि रस भय कौ जांय ॥[74]

गांधीवादी विचार धारा वाले साधारण व्यक्ति **'श्री भँवर स्वरूप भँवर'** ने अपने काव्य में अनेक राष्ट्रीय समस्याओं को प्रस्तुत किया हैं भारतीय संस्कृति पर पश्चिमी सभ्यता का बढ़ता प्रभाव राष्ट्र की संस्कृति एवं सभ्यता पर संकट पैदा कर रहा है। बढ़ती हुई महँगाई ने व्यक्ति की आत्मा को धीरे-धीरे भष्ट्र बना दिया है इन्हीं बातों का संकेत करते हुए 'श्री भँवर जी' ने मुक्तावली-कवित्त से नीति को प्रस्तुत किया हैं।

कोऊ भूखौ काम कौ है, कोऊ भूखौ दाम कौ हैं,
कोऊ भूखौ नाम कौ है, कोऊ गाम गोट कौ।
कोऊ भूखौ सूटन कौ, कोऊ भूखौ बूटन कौ,
कोऊ भूखौ पेंटन कौ, कोऊ भूखौ कोट कौ ॥
कोऊ भूखौ नाँचिबे को, गाइबे बजाइबे कौ,
'भँवर' रिझाइबे कौ, कोई खाट लोट कौ।
कोऊ भूखौ रोटन कौ, कोऊ भूखौ नोटन कौ,
कोऊ भूखौ वोटन कौ, कोऊ है सपोट कौ ॥[75]

'श्री यशकरण खिड़िया' जी ने मानव की सफलता के लिए नीति को महत्व दिया हैं दुःख में ही सुख का महत्व पता चलता हैं जब तक कठिनाई का सामना नही करते तब तक सफलता नहीं मिलती इस प्रकार सुख-दुःख दोनों पहलू का महत्व बतातें हुए उन्होंने इस दोहे को प्रस्तुत किया है।

कट मिटता करता नही, चढ़ते चरखी चीख।
नहिं तजता निज मधुर गुण, सीख ईख से सीख ॥
दुखद मोह होता सुखद, सुमति जान के संग।

जहर सुधा जैसा बनै, पाय सु वैद्य प्रसंग।।[76]

श्री फतहलाल गुर्जर जी ने नीति परख काव्य में भ्रष्टाचार, विदेशी सभ्यता, काम, धर्म और आधुनिकता के साथ बढ़ता व्यसन की समस्यायों को दर्शाया हैं तम्बाकू शराब, और पान की बुरी लत को उन्होंने उक्त रूप से वर्णन किया है।

चूना औ तमाखू ते बिगारे काहे आँत-दाँत,
दाड़म से दाने रू स्वेत चोखे जैसी चोखली।
पिच्च-पिच्च किच्च-किच्च थूकी जात दौर-दौर,
ठौर ना मिलै तो और भर दई ओखली।।
खुद पैन पावै माँग औरन ते खावै देख,
तारछ में बैठि खींच होठन सौ रोक ली।
तोय समझावैं री तमाखू मत खावै बीर
गिर जाय दाँत बंदी होय जाय बोखली।।[77]

इसी प्रकार यह छन्द भी द्रष्टाव्य है।

दिन में कमायौ, पाई एक कौ हू खायौ नाँय,
दारू पै चढ़ायौ दौरि ठेका पौंचि जावैगौ।
रुपियन गाँढ ली मौलाई एक बाटली ते,
गलियन खाटली बेहोसी में बँदावेगौ।।
करावै स्नान मुख डारैं जल-पान स्वान
चलैगी जबान सिर खोरी उरवावैगौ।
लोटा अरू थारी बेच, बंगला अटारी बेच,
लँहगा बेच, नारी बिकबावैगौ।[78]

डॉ. सियाराम सक्सेना 'प्रवर' जी ने आचरण, सत्य, गुण, पैसा और ग्राहक उपभोक्ता जैसे विषयों पर नीति परख दोहें की रचना की हैं।

ग्राहक उपभोक्ता बन्यौ, मात्र भोग उपभोग।
अपेच्छान की उपेच्छा, रत बिलास संछोम।।[79]

पैसों का महत्व दर्शाते हुए वे कहते हैं कि -

रहिमन पैसा राखिए, बिन पैसा सब सून।

मिलैं नाहिं पैसा गएं, मान, घर, बसन लून।।[80]

पानी और औंलाद में समानता बताते हुए कवि **'श्री चन्द्रेश' जी** का मानना हैं कि पानी को जिस तरह जिस बर्तन में डालें वैसा ही आकार होता हैं उसी प्रकार औलाद की परवरिश जिस तरह करेंगे वैसा ही होगा। नीति परख दोहा इसको इसी संदर्भ में लिखा गया है। द्रष्टव्य है कि -

नीर अरू औलाद में, कछूं, अंतर नाय।

जैसौ डालौं पात्र में, बंसई स्वरूप बनाय।।[81]

चरित्र का महत्व बतातें हुए लिखतें हैं कि सफेद कागज पर दाग लगने से कागज गंदा हो जाता हैं उसी प्रकार चरित्र पर एक बार दाग लगने से वह कंलकित हो जाता हैं।

चरित गया सब कछु गया, मरन समान पहचान।

ज्यौ श्वेत कागज हुबै, चन्द्रेश काल कंलकित जाना।[82]

दुःख-सुख दोनों एक दूसरें के पूरक हैं जैसे फूल और काँटा, उसी तरह जहां सुख, वहाँ दुःख भी हैं इसी को नीति परक दोहें द्वारा 'कवि चन्द्रेश' जी लिखतें हैं-

जहां फूल तहां शूल है, नियति को आधार।

कांटे बिन फूल नायं, चंद्रेश फूल न कांटा भार।।[83]

ब्रजभाषा ने परम्परागत रूप को कायम रखते हुए आधुनिकता को भी अपनाया राजनीति के साथ-साथ अब समाज में फैल रही विभिन्न समस्याओं को भी अपने शब्दों में कैद किया और लोगों के सामनें प्रस्तुत किया। विषय की सीमितता को तोड़कर काव्य का विषय विस्तृत हो गया। जैसे सामाजिक समस्याएँ दहेज प्रथा, नारी-उत्पीड़न, आतंकवाद, स्वार्थपरता, भष्ट्राचार, पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव, जनसंख्या विस्फोट, परिवार कल्याण, आज के युवक आदि।

जनसंख्या वृद्धि और मंहगाई आज देश की ज्वलन्त समस्या हैं। इसी को 'वर्तमान परिपेक्ष्य' शीर्षक द्वारा **श्री किशनवीर यादव 'ब्रजवासी' जी** ने लिखा हैं जिस में आमदनी अठन्नी खर्चा रूपयाँ की बात कही हैं।

एक दिना मैंने एक, मित्र ते यूँ पूछ लई,

कहिए जनाब और, कैसे हाल-चाल हैं।

बोले का बताऊँ यार, दुबिधा हैं बेशुमार,

आठ–आठ बच्चा बने, जान कूँ बवाल हैं।

आमदनी आठ होत, खर्चा में साठ होत,

खड़ी मेरी खाट होत, हाल बदहाल हैं।

ई तौ सिर्फ बानगी है जो मैंनें बताई तुम्हें,

याके हू अलाबा जानैं कितने सवाल है॥[84]

इस में इन्होंने ब्रजभाषा के साथ खड़ी बोली के शब्दों का उपयोग कर समस्या को सहज ढ़ंग से प्रस्तुत किया।

'श्रीमती माधुरी शास्त्री' ने गद्य-पद्य दोनों ही क्षेत्र में अनोखी रचनाएँ रची हैं जिस में सामाजिक समस्याँ को भी लिखा हैं। 'श्वान चालीसा' में जनसंख्या सम्बन्धित दोहे की रचना कर सामाजिक चेतना को उजागर करने की चेष्टा करी है। जिसमें जनसंख्या के कारण बढ़ती गरीबी, कटते जंगल, जमीन की कमी, जैंसी बिडम्बना को दर्शाया है।

जनसंख्या या देस की, पल–पल बढ़ती जाय।

माखी माछर ज्यों बढ़ै, अब कछु करौ उपाय॥

कपड़ा तन पै है नही, ना रोटी भरपूर।

घर जिनकौ फुटपाथ है, का विधि जिएँ मजूर॥

वन उपवन दीखैं नही, नाँय कहीं जल स्त्रोत।

मानुस कौ तौ बढ़ि गयौ, घटयौ वनस्पति जोत॥

कहौ कहाँ खेती करैं, कितकूँ बोबैं धान।

खेतन में अब उग रहे, चारों ओर मकान॥[85]

'टेक्स' ने मँहगाई पर करारी चोट की है इसके संदर्भ में वे कहते हैं कि -

जीवन जीनौ है कठिन, बढ़ी टैक्स की बाढ़।

महँगाई नैं और हू, दियौ कचूमर काढ़॥[86]

'श्री धनेश 'फक्कड़' हास्य और व्यंग्य के चितरे, माने जाते हैं इन्होंने भी पति-पत्नी के माध्यम द्वारा व्यंग्यात्मक ढ़ंग से मँहगाई पर कटाक्ष करते हुए कहते हैं कि -

मेरी धन्नो या मँहगाई मे मति मँहगी सारी मांगौ।

मत मँहगी सारी मांगौ, तुम भलैई थेगरी टांगौ।।[87]

अतः इसके अलावा जनसंख्या बढ़ रही हैं, सरकार प्रचार में लगी हैं मंहगाई, बेरोजगारी, गरीबी पर भी व्यंग्यात्मक रचनाएँ रची हैं।

हनुमान चालीसा की तरह इन्होंने 'फक्कड़ तेतालीसा' में तैतालीस दोहों द्वारा राजनीति नेता की पोल, और आम जनता की पीड़ा को व्यक्त किया है।

श्री गुरू चरण सरोज रज निज मन मुकुर सुधार।

नोटन ते कैसे तुलै बोटन कौ उपहार।।[88]

आजकल लोगों में अपनत्व का आभाव होता जा रहा है जिसके कारण बाजारवाद को प्रोत्साहन मिल रहा है। डॉकटर, वकील, दरोगा आदि सभी लोग सामान्य लोगों को लूटने का काम कर रहे हैं इसीको ध्यान में रखतें हुए **'श्री बनवारीलाल सोनी'** जी ने अपना कथ्य व्यंग्यात्मक रूप से प्रस्तुत किया हैं जिस में मंहगें फल, मँहगी फीस, टेस्टों की भरमार औरं डॉकटरो के पेशे को व्यापार बताया है।

महँगे फल महँगी दवा, टेस्टन की भरमार।।

पेशा डाक्टर वैध की, आज बन्यौ व्यापार।।[89]

डॉक्टर ही नहीं नर्स चपरासी भी जनता को लूट रहे हैं और साथ में मँहगाई भी इन्सान की इन्सानियत के साथ लुटती चली जा रही है। दृष्टव्य है कि

चपरासी हू गेट कौ, भीतर घुसन न देय।।

आवे-जावे मात्र के, चार रूपइया लेय।।[90]

बढ़ती जनसंख्या के कारण पढ़े लिखे लोग आज दर-दर भटक रहे हैं मँहगाई में पढ़े लिखों की मजबूरी इस प्रकार व्यक्ति की है।

बी. ए, एम, ए. पास, तेल बेचि रहे देखौ आज।[91]

इसी प्रकार नवयुवकों की मजबूरी का वर्णन अत्यन्त मार्मिक रूप में **'पं. बालीराम शर्मा'** ने अपनी कविता में की हैं इस में आज नौजवान पढ़-लिख कर भटक रहा है। रिश्वत, सिफारिश ने गुणवत्ता को कम कर दिया हैं और नाकाबिलों को कुर्सी पर बैठा दिया है। उदाहरण द्रष्टव्य है -

आज कौ पढ़वैया तौ द्वार द्वार डोलत है,
कमी रिश्वतअली सो जाय बतरावैगौ।
या हो खुशामद बेग, या सिफारसवान मिलै
उनके हू घर जाय पैर सतरावैगौ।
नवीने सामान कभी देख न सुनाई परै
जनता सौ लूट लूट आप घर लावैगौ।[92]

'श्री छुट्टन खाँ साहिल' जी ने **'विरह गीत'** के माध्यम से धार्मिक भेदभाव, भष्ट्राचार नवयुवकों की मजबुरी जैसे विषयों की अंकित किया। जैसे आपाधापी, गुण्डागर्दी लूटमार इत्यादि

आपाधापी लूटमार औ गुण्डागर्दी छाई।
कारौ कम्बर औढ़ कारी कर रहे लोग कमाई॥[93]

मँहगाई के कारण लोग कफन चुराकर बेंच रहे हैं और चारों दिशाओं में भष्ट्राचार का बोल बाला हो रहा है।

इंसानों कौ खून रही है चूस आज महंगाई।
मुर्दो के भी कफन चुरा के बेच रहे हरजाई॥[94]

नवयुकों की विडम्बना और पतन की ओर बढ़ते समाज का चित्रांकन निम्न शब्दों द्वारा दृष्टव्य है कि -

शीसों के कोठी बंगला में रिश्वल चमक रही।
देश पतन की ओर चलौ मानवता सिसक रही है॥[95]

कवियों ने हर युग में राष्ट्रीयता सामाजिकता, चेतना जागृत करने का कार्य किया हैं समाज में बढ़ती जनसंख्या और उस के कारण उत्पन्न हुई अन्य समस्याओं को कम करने का कार्य ब्रजभाषा कवियों ने भी बखूबी निभाई इस के लिए इन्होंने अहिंसा, नवयुवकं में जागरण, परिवार नियोंजन आदि जैसे विषयों पर भी लिखा हैं।

'श्री गजेन्द्र सिंह सोलंकी' जी ने राष्ट्रीयता की पराकाष्ठा कर्म को निभाते हुए देश की समस्या के निवारण हेतु 'परिवार नियोजन' जो जनसंख्या पर काबू कर विकास के कार्य हेतु अग्रगण्य हो, इस प्रकार के विषयों पर लिखा।

आए जो बस आ चुके, भीड़ बढ़ी है आन।

धरा सिकुट छोडी भई, बड़ी भई है हान॥

अब छोटे परिवार कौ, प्रमुख भयौ ऐलान।

द्वै हाथन द्वै पैर सौ, पेट बड़ौ सैतान॥[96]

इसी प्रकार नवयुवकों को अपनी धरती को बचाने के लिए अपने प्राणों को न्यौछावर करने के लिए प्रेरित करते हुए उन्होंने लिखा है कि -

गहौ हथेली प्रान अब, लपटे लेओ बचाय।

तबही धरा बच पायी है, नतरू भस्म है जाय॥[97]

आधुनिकता ने लोगों के हृदय में स्वार्थ की भावना को दिन प्रति दिन बढ़ाती जा रही हैं। यहीं नहीं साथ ही पाश्चात्य सभ्यता की ओर खींचती जा रही हैं जिस के कारण युवक-युवतियाँ अपनी संस्कृति सभ्यता और धर्म-कर्म को भूलकर नए चाल-ढ़ाल में गढ़ते जा रहे हैं कवियों ने इन बातों को भी ध्यान में रख अपने काव्यों का विषय बनाया। नए फैशन में रत नर-नारियों को दर्शाते हुए व्यंग्यात्मक रूप में **'श्री गजेन्द्र सिंह सोलंकी'** ने लिखा हैं।

लक-लक लचकै है छैल छबीली चाल।

नव फैशन की दैन है, चिकनी जिनकी खाल॥[98]

श्री बागरोदी बल्देव जी ने 'आज की व्यथा' शीर्षक द्वारा सुसभ्य लोगों पर लिखा हैं।

कलि के समे मध्य दुनिया के सुसभ्य लोग,

गिने नहीं काहू को अपने निज रंग में।

रेन दिना आठो जाम तास सतरंज खेल,

चाय सिगरेट पिये अतिशय उमंग में।[99]

भारत की प्राचीन सभ्यता मूल्यों को बचानें के लिए जागृत करते हुए **श्री हीरालाल शर्मा सरोज** ने लोगों को उठने जागने के लिए कहा हैं।

भारत के प्राचीन सब, मूल्य दिये झकझोर।

फूट द्वेष पाखण्ड कौ, चहुं दिसि है तम घोर।

चहुं दिसे है तम घोर, एकता सहज पिरानी।

सत्र रहे ललकार, धार में रझौ न पानी।

नहीं बँधे इक रज्जू, होयगौ निहचै गारत।

उठौ जगौ बड चलौ, बचानौ है यदि भारत।[100]

'आज कौ जीवन' शीर्षक द्वारा **जयशंकर प्रसाद 'जय'** ने कवित्त की रचना कर आधुनिकता में डूबे लोगों का बहुत ही खूबसूरती के साथ उनका चित्रांकन किया है।

हम कूँ आज गिनाऔ भैया का खोयौ का पायौ है?

सूत खोइकैं अब द्विजनन नैं टाई-फंदा भायौ है।

सिर की सिखा कटाय दई हैं लट लटकन लटकायौ है।

दीसत कहूं न कुरता धोती कोट पैन्ट अपनायौ है।

लाली गई लाल गालन सौं पौडर क्रीम लगायौ है।

अपनौ माल धरयौ है गिरवी जुग अब ऐसौ आयौ है॥[101]

नये समाज ने कुछ तो अपनाया मगर कुछ चीजे ऐसी हैं जिसे कुछ स्वार्थी लोगों ने अपने स्वार्थ के लिए जिंदा रखा है जो देश की एकता को तोड़कर देश की बागडोर अपने हाथ रखना चाहते हैं वही लोगों को भड़काकर जाति-पाति और ऊँच-नीच के भेदभाव को बढ़ा रहे हैं। **श्री भँवर स्वरूप भँवर जी** ने लिखा है।

'जाति पाँति के नाम पै, क्यों रहे बैर बढ़ाय।

एक पितंगा आगि ते, गांम भसम है जाय॥'[102]

श्री रमेशचन्द्र चतुर्वेदी जी ने इस प्रकार लिखा है।

'वकील, डॉकटर, वेस्या, साधु, सब मेरौ खामै।

परि जाय कछू जो काम तो, चेढ़े ही बतरामैं॥'[103]

साम्प्रदायिकता आजकल हर जगह फैल गई हैं एकता का संदेश देते हुए साम्प्रदायकिता पर **''श्री बालकृष्ण थोलम्बिया''** लिखते हैं।

धर्म स्थल में जब भई दानवता अभिषिक्त।

क्षत-क्षत मानवता भई, सिता-एकता तिक्त।

सिता एकता तिक्त घुरयौ विष अमृत सर में।

राम राज्य कौ स्वप्न टायौ रहि गयौ अधर में।

प्रिय हरि विघटन प्रेम खेलतो अन्तस्थल में।
साधि हैं का अभिप्रेत कहों ये धर्मस्थल में॥[104]

इस प्रकार से देश पर मँडरा रहें अनेक काले बादल रूपी जनसंख्या विस्फोट मँहगाई, साम्प्रदायिकता, उस पर राजनीति के खेल को अपने शब्दों में कवियों ने समय-समय पर दोहा, छन्द पद, कुण्डलियाँ और मुक्तक रूप में रच कर देश में जागृति लोने का कार्य किया। संस्कृति पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव, व्यसन समस्या आज देश की उन्नति में बाधा रूप बन गए हैं। इन सब के साथ कवियों ने देश में नारियों का स्थान उन की स्थिती को भी अपनी कलम से रच कर देश में स्त्रियों की स्थिती में सुधार लाने का प्रयत्न किया है।

नारी को बचपन से ही अशुभ माना जाता हैं ब्याह में दहेज देना ही माँ-बाप की मजबूरी बन कर उसे एक शाप माननें पर मजबूर करता हैं उस पर विधवा हो जाना और विधवा विवाह तो इस समाज में विकट समस्या बन रहा हैं। **'श्रीमती प्रमिला गंगल'** ने नारी उत्पीड़न को ब्रजभाषा में सुंदर चित्रण किया हैं।

मैया कब मेरी ब्याह सगाई करी?
मैया कब मेरी कौन ते भँवर परी?
मैया ब्याही नाँय अरू विधवा भई?
मैया का तैनें मोते छलना करी?
मैया देखीऊ नाँय सुसरार गलियां
मैया फुलिह नाँय मुरझाई कलियां
मैया मै तौ जिन्दा लास भई।[105]

'श्री भँवर स्वरूप भँवर' जी ने विधवा विवाह को समस्या के रूप में प्रस्तुत कर यह बताने कि कोशिश की हैं कि विधावाओं में भी जान होती है, उनको भी जीने का हक है इसलिए इस समस्या का समाधन करना जरूरी हैं।

सब सुख की नींद सोवें, हम बैठे बैठे रोवें।
आंसुन ले मुँह धोवै रे, समस्या कैसे सुरझै॥
घर के मतलब के गर्जी, सब बात बनावै फर्जी।
मेरी हिन्दू समाज ते अर्जी, समस्या कैसे सुरझै?[106]

कुण्डलियाँ के रूप में भी विधवा की मजबूरी को वर्णित किया हैं।

बेटी विधवा है गई, रही बाप घर आय।
माता पिता अति दुखित हैं, बुद्ध रहे सिहाय।
बुद्ध रहे सिहाय, इशारेन में बतरावैं।
आगि-फूंस कौ बैर कहाँ लों मन समझावैं।।
पुनब्याहि में नाक कटै, समझै कुल हेटी।
सधवा फूली फिरै दुखी हैं विधवा बेटी।।[107]

'श्री बनवारी लाल सोनी' दहेज सामाजिक समस्या रूप में नारी के लिए अभिशाप हैं उस को दोहें के रूप में रचा हैं।

क्लर्क होइ तौ लाख में, अफसर कूँ है लाख।
बिना नोट रिस्तौ नही, छानी जग की खाक।।[108]

* * *

इक कन्या के ब्याह में, बीत्यौ जी. पी. कण्ड।
बाजे, बिजली-टैंट हित, भरयौ ब्याज कौ दण्ड।।[109]

* * *

लड़की एम. ए. पास है, लड़का बी. ए. फेल।
बिन दहेज शादी नही, ये करमन के खेल।।[110]

आरक्षण भी आज सब जगह अपनी जगह बढ़ता जा रहा है **श्री बालकृष्ण थोलम्विया** में लिखा हैं।

वर्ग भेद को मानते जब सब विधि अभिशाप।
फिर क्यो ढ़ोते जा रहे, आरक्षण का पाप।।[111]

इस प्रकार ब्रजभाषा में कवियों ने काव्य के परम्परागत रूप के साथ आधुनिकता की ओर भी अपनी द्रष्टि को घुमाते हुए हर एक हिस्से में अपना एक अलग द्रष्टिकोण प्रस्तुत किया।

परम्परागत काव्य की विशिष्टता यह रही की इन कवियों ने कबीर, सूर, तूलसी की तरह भक्ति के विषय को हर एक रूप में दर्शाया चाहें वह कृष्ण की बाल लीला, रास लीला, उद्धव वचन या वात्सल्य वर्णन हो। और चाहें वह विद्यापति की तरह

शृंगारिक वर्णन हो जिस में विरहित नायिका, और नायक नायिका को सौंदर्य वर्णन हों। भक्ति की सर्वप्रियता रही हैं। अनेक देवी-देवताओं की स्तुति, वंदना, प्रार्थना की गई। विनय, दास्य और शृंगारिक भक्ति पर काफी मात्रा में दोहा, पद, छन्द और कवित्त रचे गए।

दूसरी और समय और समाज में बदलते रूप को भी कवियों में बहुत सुंदर ढंग से रचा। समाज में व्याप्त जनसंख्या, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, बेईमानी, रिश्वत खोरी, दहेज, पाश्चात्य भाषा संस्कृति का प्रभाव और नारी उत्पीड़न जैसी समस्याओं को प्रस्तुत किया। सिर्फ समस्याओं को काव्य में दर्शाया ही नही बल्कि नवयुवकों को जागृत करने के लिए भी रचनाएँ रची। इन को प्रस्तुत करने के लिए कवित्त, दोहा, पद और छन्द के रूप में ही प्रस्तुत किया साथ ही ग़ज़ल, पैरोड़ियों द्वारा भी प्रस्तुत किया।

इस प्रकार ब्रजभाषा का परम्परा और प्रयोग द्वारा श्रद्धाभक्ति का गायन, विरह वेदना की अभिव्यक्ति, भ्रमित त्रासित जनता के उद्बबोधन को सरलता, सौम्यता और विनम्रता द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

* * * * *

संदर्भ सूचि

1. पुस्तक : राजस्थान के अज्ञात ब्रजभाषा साहित्यकार, भाग-1, सम्पादक : डॉ. विष्णु चन्द्र पाठक, पृ. 122
2. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-2, सम्पादक : डॉ. विष्णु चन्द्र पाठक, पृ 29
3. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-3, वही, पृ. : 156
4. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-6, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ. 216
5. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-6, सम्पादक : वही, पृ. 216
6. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-7, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ. 51
7. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-8, सम्पादक : वही, पृ. 143
8. पुस्तक : राजस्थान के अ.ब्र.स. भाग-15, सम्पादक : गोपाल प्रसाद मुद्गल, पृ. 79
9. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-2, सम्पादक : डॉ. विष्णु चन्द्र पाठक, पृ.154
10. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-1, सम्पादक : वही, पृ. 90
11. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-8, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ. 262
12. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-12, सम्पादक : वही, पृ. 202
13. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-17, सम्पादक : गोपाल प्रसाद मुद्गल, पृ. 24
14. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-1, सम्पादक : डॉ. विष्णुचन्द्र पाठक, पृ. 105
15. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-2, सम्पादक : डॉ. विष्णु चन्द्र पाठक, पृ. 201
16. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-3, सम्पादक : डॉ. विष्णु चन्द्र पाठक, पृ. 222
17. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-3, सम्पादक : डॉ. विष्णु चन्द्र पाठक, पृ. 223
18. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-3, सम्पादक : डॉ. विष्णु चन्द्र पाठक, पृ. 224
19. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-3, सम्पादक : डॉ. विष्णु चन्द्र पाठक, पृ. 221
20. पुस्तक : र.के.अ.ब्र.स. भाग-5, सम्पादक : विष्णुचन्द्र पाठक, पृ. 211
21. पुस्तक : र.के.अ.ब्र.स. भाग-5, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ. 211
22. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ.211
23. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-5, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ. 169
24. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-9, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ.40
25. पुस्तक : वही, संपादक : वही, पृ. 40
26. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-6, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ. 226
27. पुस्तक : र.अ.ब्र.स., भाग-6, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ. 226
28. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 227
29. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 227
30. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-7, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ. 220
31. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-1, सम्पादक : डॉ. विष्णुचन्द्र पाठक, पृ. 118
32. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-1, सम्पादक : डॉ. विष्णुचन्द्र पाठक, पृ. 192
33. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-1, सम्पादक : डॉ. विष्णुचन्द्र पाठक, पृ. 155
34. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-2, सम्पादक : डॉ. विष्णु चन्द्र पाठक, पृ. 172
35. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-2, सम्पादक : डॉ. विष्णु चन्द्र पाठक, पृ. 231
36. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-1, सम्पादक : डॉ. विष्णुचन्द्र पाठक, पृ. 8
37. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-1, सम्पादक : डॉ. विष्णुचन्द्र पाठक, पृ. 9
38. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-1, सम्पादक : डॉ. विष्णुचन्द्र पाठक, पृ. 15
39. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-3, सम्पादक : डॉ, विष्णुविराट पाठक, पृ. 99
40. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-5, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ. 80
41. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-5, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ. 81

42. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-6, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ. 45
43. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-10, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, , पृ. 273
44. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-7, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ. 232
45. पुस्तक : र.अ.भ्र.स. भाग-14, सम्पादक : गोपाल प्रसाद मुद्गल, पृ. 207
46. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-16, सम्पादक : गोपाल प्रसाद मुद्गल, पृ. 381
47. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-16, सम्पादक : गोपाल प्रसाद मुद्गल. पृ. 31
48. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-1, सम्पादक : डॉ. विष्णु चन्द्र पाठक, पृ. 94
49. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-1, सम्पादक : डॉ. विष्णु चन्द्र पाठक, पृ. 98
50. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-2, सम्पादक : डॉ. विष्णु चन्द्र पाठक, पृ. 25
51. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-2, सम्पादक : डॉ. विष्णु चन्द्र पाठक, पृ. 156
52. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-3, सम्पादक : डॉ, विष्णुविराट पाठक , पृ. 124
53. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-5, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ. 173
54. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-7, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ. 76
55. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-10, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ. 11
56. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-13, सम्पादक : गोपाल प्रसाद मुद्गल, पृ. 8
57. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-13, सम्पादक : गोपाल प्रसाद मुद्गल, पृ. 8
58. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-13, सम्पादक : गोपाल प्रसाद मुद्गल, पृ. 145
59. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-13, सम्पादक : गोपाल प्रसाद मुद्गल, पृ. 145
60. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-6, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ. 69
61. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-6, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ. 72
62. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-6, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ. 231
63. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-6, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ. 246
64. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-1, सम्पादक : डॉ. विष्णु चन्द्र पाठक, पृ. 203
65. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-2, सम्पादक : डॉ. विष्णु चन्द्र पाठक, पृ. 155
66. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-3, सम्पादक : डॉ. विष्णु विराट पाठक, पृ. 141
67. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-3, सम्पादक : डॉ. विष्णु विराट पाठक, पृ. 75
68. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-6, सम्पादक : डॉ. विष्णु विराट पाठक, पृ. 184
69. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-6, सम्पादक : डॉ. विष्णु विराट पाठक, पृ. 185
70. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-6, सम्पादक : डॉ. विष्णु विराट पाठक, पृ. 92
71. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-6, सम्पादक : डॉ. विष्णु विराट पाठक, पृ. 92
72. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-7, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ. 183
73. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-1, सम्पादक : डॉ. विष्णु चन्द्र पाठक, पृ. 172
74. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-7, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ. 71
75. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-8, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ. 162
76. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-8, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ. 263
77. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-15, सम्पादक : गोपाल प्रसाद मुद्गल, पृ. 88
78. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-15, सम्पादक : गोपाल प्रसाद मुद्गल, पृ. 88
79. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-15, सम्पादक : गोपाल प्रसाद मुद्गल, पृ. 190
80. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-15, सम्पादक : गोपाल प्रसाद मुद्गल, पृ. 190
81. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-6, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ. 81
82. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-6, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ. 81
83. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-6, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ. 81
84. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-16, सम्पादक :गोपाल प्रसाद मुद्गल, पृ. 33
85. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-17, सम्पादक : गोपाल प्रसाद मुद्गल, पृ. 299

86. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-17, सम्पादक : गोपाल प्रसाद मुद्गल, पृ. 300
87. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-7, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ. 158
88. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-7, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ. 166
89. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-13, सम्पादक : गोपाल प्रसाद मुद्गल, पृ. 84
90. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-13, सम्पादक : गोपाल प्रसाद मुद्गल, पृ. 84
91. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-13, सम्पादक : गोपाल प्रसाद मुद्गल, पृ. 85
92. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-10, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ. 201
93. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-10, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ. 109
94. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-10, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ. 109
95. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-10, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ. 109
96. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-10, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ. 55
97. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-10, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ. 55
98. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-10, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ. 54
99. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-2, सम्पादक : डॉ. विष्णु चन्द्र पाठक, पृ. 227
100. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-2, सम्पादक : डॉ. विष्णु चन्द्र पाठक, पृ. 158
101. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-1, सम्पादक : डॉ. विष्णु चन्द्र पाठक, पृ. 209
102. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-8, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ. 157
103. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-6, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ. 19
104. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-6, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ. 179
105. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-13, सम्पादक : गोपाल प्रसाद मुद्गल, पृ. 255
106. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-8, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ. 148
107. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-8, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ. 149
108. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-13, सम्पादक : गोपाल प्रसाद मुद्गल, पृ. 131
109. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-13, सम्पादक : गोपाल प्रसाद मुद्गल पृ. 131
110. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-13, सम्पादक : गोपाल प्रसाद मुद्गल, पृ. 131
111. पुस्तक : र.अ.ब्र.स. भाग-6, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ. 186